2021

HINDI — HONOURS

Paper : DSE-B-2

(Chhayavad)

Full Marks : 65

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×10

(क) महादेवी वर्मा को उनकी किस कृति के लिए सेक्सरिया पुरस्कार मिला था? उसका प्रकाशन वर्ष लिखिए।

(ख) किस छायावादी रचनाकार के काव्य में शुद्ध रहस्यवाद है? उनकी किसी एक काव्यकृति का नाम बताइए।

(ग) छायावाद का प्रवर्त्तन प्रसाद जी की किस रचना से माना जाता है? वह किस वर्ष प्रकाशित हुई?

(घ) 'नौका विहार' के कवि कौन हैं? उनकी किसी एक प्रगतिवादी रचना का नाम लिखिए।

(ङ) निराला का प्रथम कविता-संग्रह कौन-सा है? उसका प्रकाशन वर्ष बताइए।

(च) 'छायावाद' नाम किस साहित्यकार का दिया हुआ है? उनकी किसी एक रचना का नाम बताइए।

(छ) "दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही" – किस कवि की पंक्ति है? उनकी किसी अन्य रचना का नाम लिखिए।

(ज) महादेवी वर्मा ने किस पत्रिका का संपादन किया था? उसका प्रकाशन स्थान बताइए।

(झ) "अखिल विश्व में रमा हुआ है राम हमारा,
सकल चराचर जिसका क्रीड़ापूर्ण पसारा"
– ये पंक्तियाँ किस रचनाकार की हैं? रचना का नाम भी बताएं।

(ञ) "चींटी है ___ ___" पंक्ति को पूरा कीजिए, साथ ही रचनाकार का नाम भी बताइए।

2. किन्हीं ***तीन*** लघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×3

(क) 'बाँधो न नाव इस ठाँव' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) "मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।"
– उक्त पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(ग) छायावाद के अंतर्गत 'प्रकृति के मानवीकरण' से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर लिखिए।

(घ) महादेवी वर्मा द्वारा व्यंजित 'रहस्यवाद' की परिभाषा अपने शब्दों में लिखिए।

(ङ) 'भारत-महिमा' कविता का मूल-स्वर क्या है? संक्षेप में लिखिए।

3. किन्हीं ***तीन*** आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3

(क) 'छायावाद' की परिभाषा बताते हुए छायावाद की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ख) 'महादेवी के काव्य की अप्रतिम विशेषता है – वेदना-तत्त्व' – इस कथन की तर्क संगत पुष्टि कीजिए।

(ग) छायावादी काव्य-प्रवृत्तियों के आधार पर 'निराला' की रचनाओं की विवेचना कीजिए।

(घ) जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ङ) किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

(अ) रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं;
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव-ममता के दाने बोने हैं
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, ...

अथवा,

(आ) जातियों का उत्थान-पतन, आंधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर।
चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।